पाठ्यक्रम संचरना

कक्षा – XII

विषय – समाजशास्त्र (104)

पूर्णांक – 100

सैद्धांतिक – 80
प्रायोजना – 20

क्रमांक	इकाई एवं पाठ्यवस्तु	आबंटित अंक	कालखण्ड
भाग–1 भारतीय समाज			
1.	भारतीय समाज : एक परिचय	-	-
2.	भारतीय समाज की जनसांख्यिकी संरचना	04	10
3.	सामाजिक संस्थाएँ : निरंतरता एवं परिवर्तन	06	12
4.	बाजार एक सामाजिक संस्था के रूप में	08	15
5.	सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार के स्वरूप	08	18
6.	सांस्कृतिक विविधता की चुनौतियाँ	04	22
भाग–2 भारत में सामाजिक परिवर्तन एवं विकास			
7.	संरचनात्मक परिवर्तन	06	10
8.	सांस्कृतिक परिवर्तन	08	12
9.	संविधान एवं सामाजिक परिवर्तन	02	16
10.	ग्रामीण समाज में विकास एवं परिवर्तन	05	15
11.	आद्योगिक समाज में परिवर्तन और विकास	02	15
12.	भूमण्डलीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन	08	15
13.	जनसंपर्क साधन और जनसंचार	10	20
14.	सामाजिक आंदोलन	09	20
	कुलयोग	**80**	**200**
	प्रायोजना कार्य	**20**	**20**
	महायोग	**100**	**220**

परिशिष्ट – "B"

प्रश्नपत्र योजना
कक्षा – XII
विषय–समाजशास्त्र (104)

पूर्णांक –80 समय–03 घण्टे

"A"-प्रश्नानुसार अंक विभाजन

क्र.	प्रश्नों के प्रकार	वस्तुनिष्ठ/ एक शब्द में उत्तर	अति लघु उत्तरीय (VSA)	लघु उत्तरीय (SA)	दीर्घ उत्तरीय (LA-I)	दीर्घ उत्तरीय (LA-II)	दीर्घ उत्तरीय (VLA)	कुल अंक	% अधिभार
		01	02	03	04	05	06		
1.	ज्ञानात्मक (Knowledge) परिभाषा, सिद्धांत, तथ्यों को पहचानना, सूचना इत्यादि पर आधारित सामान्य स्मरण क्षमता पर आधारित प्रश्न	03	01	02	-	01	-	16	20%
2.	अवबोधात्मक (Understanding) अर्थ, व्याख्या, अंतर स्पष्ट करना, वैचारिक समझ, भावानुवाद	01	01	01	02	-	01	20	25%
3.	अनुप्रयोगात्मक (Application) उदाहरण सहित/संदर्भ और समझ के आधार पर दी गई नयी परिस्थितियों को समझाना/सिद्धांत के समाधान/हल निकालना	04	-	01	02	01	-	20	25%
4.	विश्लेषणात्मक(Analysis) [HOTS] वर्गीकृत, तुलनात्मक, व्याख्या विभिन्न स्त्रोतों पर आधारित विशेष जानकारी को समाहित करना/ एकीकरण /सुसंगठित करना/अंतर	-	01	-	-	-	01	08	10%
5.	मूल्यांकन (Evaluation) मूल्यांकन करना/समीक्षा करना/मूल्य निर्धारण/निष्कर्ष निकालना/चयन करना /तर्क आधारित	04	02	-	-	-	-	08	10%
6.	रचनात्मक (Creation/Creativity) सृजन करना/पूर्वानुमान/योजना बनाना/परिकल्पना/संगठित करना	03	01	01	-	-	-	08	10%
	योग	1(15)=15	2(6)=12	3(5)=15	4(4)=16	5(2)=10	6(2)=12	80	100%

"B"-प्रश्नानुसार विभाजन

क्र.	प्रश्नों के प्रकार	प्रत्येक प्रश्न पर आबंटित अंक	कुल प्रश्न	कुल अंक
1.	वस्तुनिष्ठ/एक शब्द में उत्तर	01(15)	15	15
2.	अति लघुउत्तरीय (VSA)	02	06	12
3	लघुउत्तरीय (SA)	03	05	15
4.	दीर्घउत्तरीय (LA-I)	04	04	16
5.	अति दीर्घउत्तरीय (LA-II)	05	02	10
6.	अति दीर्घउत्तरीय (VLA)	06	02	12
		योग	19+1(15)=20	80

"C"- कठिनाई स्तर अनुसार विभाजन

क्र.	कठिनाई स्तर	अंक	प्रतिशत
1.	सरल (E)	24	30%
2.	औसत (AV)	40	50%
3.	कठिन (D)	16	20%
	योग	80	100%

परिशिष्ट – "C"

ब्लूप्रिंट
कक्षा – XII
विषय – समाजशास्त्र (104)

पूर्णांक – 80 समय – 3:00 घण्टे

क्र0	इकाई एवं पाठ्यवस्तु	अंको का अधिभार	वस्तुनिष्ठ/ एक शब्द में उत्तर	अति लघु उत्तरीय (VSA)	लघु उत्तरीय (SA)	दीर्घ उत्तरीय (LA-I)	दीर्घ उत्तरीय (LA-II)	दीर्घ उत्तरीय (VLA)	कुल अंक	कुल प्रश्नों की संख्या
			01	02	03	04	05	06		
1.	भारतीय समाज : एक परिचय	-	-	-		-		-	-	-
2.	भारतीय समाज की जनसांख्यिकी संरचना	04	01	-	01	-	-	-	04	1(1)
3.	सामाजिक संस्थाएँ : निरंतरता एवं परिवर्तन	06	02	-	-	01*	-	-	06	1(2)
4.	बाजार एक सामाजिक संस्था के रूप में	08	01	01	-	-	01*	-	08	2(1)
5.	सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार के स्वरूप	08	01	01	-	-	01*	-	08	2(1)
6.	सांस्कृतिक विविधता की चुनौतियाँ	04	01	-	01	-	-	-	04	1(1)
7.	संरचनात्मक परिवर्तन	06	01	01	01	-	-	-	06	2(1)
8.	सांस्कृतिक परिवर्तन	08	01	-	01	01*	-	-	08	2(1)
9.	संविधान एवं सामाजिक परिवर्तन	02	-	01	-	-	-	-	02	1(0)
10.	ग्रामीण समाज में विकास एवं परिवर्तन	05	01	-	-	01*	-	-	05	1(1)
11.	औद्योगिक समाज में परिवर्तन और विकास	02	02	-	-	-	-	-	02	0 (2)
12.	भूमण्डलीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन	08	01	-	01	01*		-	08	2(1)
13.	जनसंपर्क साधन और जनसंचार	10	02	01	-	-	-	01*	10	2 (2)
14.	सामाजिक आंदोलन	09	01	01	-	-	-	01*	09	2 (1)
	कुल योग	**80**	1(15)=15	2(6)=12	3(5)=15	4(4)=16	5(2)=10	6(2)=12	**80**	19+1(15) =20

नोट :–(i) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के दो भाग होंगे। खण्ड 'अ' में 10 बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ) एवं खण्ड "ब" में 05 प्रश्न एक शब्द में उत्तर (OWA) प्रश्न होंगे।

(ii) * तारांकित वाले प्रश्नों में विकल्प दिया जाना है।

(iii) कोष्ठक के बाहर की संख्या अंको को_दर्शाती है तथा कोष्ठक के अंदर की संख्या प्रश्नों की संख्या को दर्शाती है।

परिशिष्ट – "C-01"

प्रश्नपत्र योजना
कक्षा – 12वीं
विषय – समाजशास्त्र (104)

पूर्णांक – 80 समय – 3:00 घण्टे

1. प्रश्न क्र0–1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न है जिसमें दो खण्ड होंगे :–
   (i) "खण्ड–अ" 10 बहुविकल्पीय (MCQ) प्रश्न होगें। जिसमें प्रत्येक में 01 अंक निर्धारित है।
   (ii) खण्ड–"ब" में 05 एक शब्द में उत्तर वाले (OWA) प्रश्न होंगे। जिसमें प्रत्येक में 01 अंक निर्धारित है।
2. प्रश्न क्र0–02 से प्रश्न क्र. 07 तक अति लघुउत्तरीय (VSA) होगें, जिसमें प्रत्येक में 02 अंक निर्धारित है। शब्द सीमा 30 शब्द
3. प्रश्न क्र0– 08 से प्रश्न क्र0 12 तक लघुउत्तरीय (SA) होगें, जिसमें प्रत्येक में 03 अंक निर्धारित है। शब्द सीमा 50 शब्द
4. प्रश्न क्र0– 13 से प्रश्न क्र0 16 तक दीर्घउत्तरीय (LA-I) होगें, जिसमें प्रत्येक में 04 अंक निर्धारित है। शब्द सीमा 75–80 शब्द
5. प्रश्न क्र0– 17 से प्रश्न क्र0 18 तक दीर्घउत्तरीय (LA-II) होगें, जिसमें प्रत्येक में 05 अंक निर्धारित है। शब्द सीमा 100–150 शब्द
6. प्रश्न क्र0 19 से प्रश्न क्र0 20 तक अति दीर्घउत्तरीय (VLA) होगें, जिसमें प्रत्येक में 06 अंक निर्धारित है। शब्द सीमा 150–200 शब्द

पाठ्यक्रम

कक्षा–XII

विषय–समाजशास्त्र (104)

सैद्धांतिक अंक–80 समय–3 घंटे

भाग–1 भारतीय समाज

अध्याय : एक – भारतीय समाज : एक परिचय

एक परिचय का परिचय, पाठ्यवस्तु का पूर्व दर्शन।

अध्याय : दो – भारतीय समाज की जनसांख्यिकीय संरचना 04 अंक 10 कालखण्ड

जनसांख्यिकीय संबंधी कुछ सिद्धांत एवं संकल्पनाएँ– माल्थस का जनसंख्या वृद्धि का सिद्धांत, जनसांख्यिकीय संक्रमण का सिद्धांत, सामान्य संकल्पनाएँ एवं संकेतक। भारत की जनसंख्या का आकार और संमृद्धि, भारतीय जनसंख्या की आयु संरचना, भारत में गिरता हुआ स्त्री–पुरूष अनुपात, साक्षरता, ग्रामीण–नगरीय विभिन्नताएँ। भारत की जनसंख्या नीति।

अध्याय : तीन – सामाजिक संस्थाएँ : निरंतरता एवं परिवर्तन 06 अंक 12 कालखण्ड

जाति एवं जाति व्यवस्था– अतीत में जाति उपनिवेशवाद और जाति, जाति का समकालीन रूप। जनजातीय समुदाय – जनजातिः एक संकल्पना की जीवनी, राष्ट्रीय विकास बनाम जनजातीय विकास, समकालीन जनजातीय पहचान। परिवार और नातेदारी– मूल एवं विस्तारित परिवार, परिवार के विविध रूप।

अध्याय : चार – बाजार एक सामाजिक संस्था के रूप में 08 अंक 15 कालखण्ड

बाजार और अर्थव्यवस्था का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य– छत्तीसगढ़ के जिला बस्तर में धोराई गाँव का एक साप्ताहिक 'आदिवासी बाजार', पूर्व उपनिवेशिक और उपनिवेशिक भारत में जाति आधारित बाजार एवं व्यापारिक तंत्र, उपनिवेशवाद और नए बाजारों का आभिर्भाव। पूँजीवाद को एक सामाजिक व्यवस्था के रूप में समझना– वस्तुकरण या पण्यीकरण और उपयोग। भूमंडलीयकरण : स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों का गठजोड़– उदारवादिता पर बहस : बाजार बनाम राज्य।

अध्याय : पाँच – सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार के स्वरूप 08 अंक 18 कालखण्ड

सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार सामाजिक कैसे है?, सामाजिक विषमता, सामाजिक अपवर्जन या बहिष्कार। जाति और जनजाति : दो व्यवस्थाएँ जो विषमता को कायम रखती है एवं न्यायसंगत सिद्ध करती हैं, जाति : एक भेदभावपूर्ण व्यवस्था, अस्पृश्यता, जातियों और जनजातियों के प्रति भेदभाव मिटाने के लिए राज्य और अन्य संगठनों द्वारा उठाए गए कदम, अन्य पिछड़ा वर्ग, आदिवासी संघर्ष। स्त्रियों की समानता और अधिकारों के लिए संघर्ष, अन्यथा सक्षम व्यक्तियों का संघर्ष।

अध्याय : छः – सांस्कृतिक विविधता की चुनौतियाँ 04 अंक 22 कालखण्ड

समुदाय पहचान का महत्व, समुदाय राष्ट्र एवं राष्ट्र–राज्य सांस्कृतिक विविधता और भारत राष्ट्र के रूप में। भारतीय संदर्भ में क्षेत्रवाद, धर्म से संबंधित मुद्दे और पहचानें, अल्पसंख्यकों के अधिकारी और राष्ट्र–निर्माण, सांप्रदायिकता, धर्मनिरपेक्षता एवं राष्ट्र–राज्य, राज्य और नागरिक समाज।

भाग–2 भारत में समाज परिवर्तन एवं विकास

अध्याय : सात – संरचनात्मक परिवर्तन 06 अंक 10 कालखण्ड

उपनिवेशवाद की समझ, नगरीकरण और औद्योगीकरण– औपनिवेशिक अनुभव, चाय की बागवानी, स्वतंत्र भारत में औद्योगीकरण, स्वतंत्र भारत में नगरीकरण।

अध्याय : आठ – सांस्कृतिक परिवर्तन 08 अंक 12 कालखण्ड

उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में हुए समाज सुधार आंदोलन, विभिन्न प्रकार के सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न प्रकार– संस्कृतीकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण और पंथ निरपेक्षीकरण।

अध्याय : नौ – संविधान एवं सामाजिक परिवर्तन 02 अंक 16 कालखण्ड

संवैधानिक मानदंड और सामाजिक न्याय : सामाजिक न्याय की व्याख्या, पंचायती राज और ग्रामीण सामाजिक रूपांतरण की चुनौतियाँ– पंचायती राज के आदर्श, पंचायतों की शक्तियाँ एवं उत्तरदायित्व, जनजाति क्षेत्रों में पंचायती राज, लोकतंत्रीकरण असमानता। लोकतांत्रिक राजनीति में राजनीतिक दल, दबाव एवं हितसमूह।

अध्याय : दस – ग्रामीण समाज में विकास एवं परिवर्तन 05 अंक 15 कालखण्ड

भूमिका, कृषिक संरचना– ग्रामीण भारत में जाति एवं वर्ग। भूमि सुधार के परिणाम– औपनिवेशिक काल, स्वतंत्र भारत। हरित क्रांति और इसके सामाजिक परिणाम। स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण समाज में परिवर्तन, मजदूरों का संचार, भूमंडलीयकरण, उदारीकरण तथा ग्रामीण समाज।

अध्याय : ग्यारह – औद्योगिक समाज में परिवर्तन और विकास 02 अंक 15 कालखण्ड

भूमिका, औद्योगिक समाज की कल्पना, भारत में औद्योगिकीकरण– भारतीय औद्योगिकीकरण की विशेषताएँ, भूमंडलीयकरण, उदारीकरण एवं भारतीय उद्योगों में परिवर्तन। लोग काम किस तरह पाते है?, काम को किस तरह किया जाता है, कार्यावस्थाएँ, घरों में होने वाला काम, हड़तालें और मजदूर संघ।

अध्याय : बारह – भूमंडलीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन 08 अंक 15 कालखण्ड

भूमिका, क्या भूमंडलीकरण के अन्तःसंबंध विश्व और भारत के लिये नये हैं?– प्रारंभिक वर्ष, उपनिवेशवाद और भूमंडली संयोजन, स्वतंत्र भारत और विश्व। भूमंडलीकरण की समझ– भूमंडलीकरण

के विभिन्न आयाम, भूमंडलीय संचार, भूमंडलीकरण और श्रम, भूमंडलीकरण और रोजगार, भूमंडलीकरण और राजनीति परिवर्तन, भूमंडलीकरण और संस्कृति। सजातीयकरण बनाम संस्कृति का भूस्थानीकरण– जेण्डर और संस्कृति, उपभोग की संस्कृति, निगम संस्कृति। अनेक स्वदेशी शिल्प, साहित्यिक परम्पराओं और ज्ञान व्यवस्थाओं को खतरा।

अध्याय : तेरह – जनसंपर्क साधन और जनसंचार 10 अंक 20 कालखण्ड

भूमिका, आधुनिक मास मीडिया का प्रारंभ, स्वतंत्र भारत में मास मीडिया– रेडियो, टेलीविजन, प्रिंट मीडिया। भूमंडलीकरण और मीडिया– प्रिंट मीडिया, टेलीविजन, रेडियो।

अध्याय : चौदह – सामाजिक आंदोलन 09 अंक 20 कालखण्ड

भूमिका, सामाजिक आंदोलन के लक्षण– सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक आंदोलन में अंतर। समाजशास्त्र और सामाजिक आंदोलन– सामाजिक आंदोलन का अध्ययन समाजशास्त्र के लिये क्यों महत्वपूर्ण हैं?। सामाजिक आंदोलनों के प्रकार– वर्गीकरण का एक प्रकार सुधारवादी, प्रतिदानात्मक, क्रांतिकारी, नये सामाजिक आंदोलनों की पुराने सामाजिक आंदोलनों से भिन्नता। पारिस्थितिकीय आंदोलन, वर्ग आधारित आंदोलन– किसान आंदोलन, कामगारों का आंदोलन। जाति आधारित आंदोलन– दलित आंदोलन, पिछड़े वर्ग और जातियों के आंदोलन। जनजातीय आंदोलन– झारखण्ड, पूर्वोत्तर। महिलाओं का आंदोलन–उन्नसवीं सदी के समाज सुधार आंदोलन तथा प्रारंभिक महिला संगठन, कृषिक संघर्ष तथा क्रांतियाँ, 1947 के बाद, निष्कर्ष।

योग	80	200
प्रायोजना	20	20
महायोग	100	220

प्रायोजना कार्य
कक्षा – XII
विषय – समाजशास्त्र (104)

अंक : 20 अंक समय : 02 घण्टे

मूल्यांकन योजना

स.क्र.	विषयवस्तु	अंक
(A)	शालेय स्तर पर शैक्षणिक सत्र के दौरान किए जाने वाले प्रायोजना कार्य	
I	**Statement of the Purpose** (उद्देश्य कथन)	10
II	**Methodology/Technique** (प्रक्रिया/तकनीक)	
III	**Conclusion** (निष्कर्ष)	
(B)	**Viva based on the Project work** (प्रोजेक्ट कार्य पर मौखिक)	02
(C)	**Research Design: Steps of research (eg. Observation, interview, content analysis) to be explained to student and question accordingly raised.** (अनुसंधान के चरण :– अवलोकन, साक्षात्कार, विषयवस्तु विश्लेषण)	
I	**Overall format** (सम्पूर्ण प्रारूप की जानकारी)	01
II	**Research Question/Hypothesis** (अनुसंधान प्रश्न/परिकल्पना)	01
III	**Choice of technique** (तकनीक चयन)	02
IV	**Detailed procedure for implementation of technique** (तकनीक के क्रियान्वयन के लिए संपूर्ण प्रक्रिया)	02
V	**Limitations of the above technique** (उपरोक्त तकनीक की सीमाएँ)	02
	योग	20